Tittle Front Page

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओं भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि।
धियो यो नः
प्रचोदयात्॥

Born	:	12 February, 1824, Tankara (Gujarat)
Birth Name	:	Mul Shankar Tiwari
Literary Works	:	Satyarth Prakash (1875)
Guru	:	Sh. Virajanand Dandeesha
Assassinated	:	30 October, 1883, Ajmer (Rajasthan)
Father	:	Sh. Karshanji Lalji Tiwari
Mother	:	Smt. Yashodabai

Tittle Back Page

॥ ओ३म् ॥

सर्वतीर्थमयी मुक्तिदायिनी गोमाता

गौ के शरीर में समस्त देवगण निवास करते हैं और गौ के पैरो में समस्त तीर्थ निवास करते हैं। गौ के गुह्यभाग में लक्ष्मी सदा रहती है। गौ के पैरों में लगी हुई मिट्टी का तिलक जो मनुष्य अपने मस्तक में लगाता है, वह तत्काल तीर्थ जल में स्नान करने का पुण्य प्राप्त करता है और उसकी पद-पद पर विजय होती है। जहाँ पर गौएँ रहती हैं उस स्थान को तीर्थ भूमि कहा गया है, ऐसी भूमि में जिस मनुष्य की मृत्यु होती हैं वह तत्काल मुक्त हो जाता है, यह निश्चित है।

संकलनकर्ता: नागपाल परिवार, फरीदाबाद
सहयोग: पं. सुरेश शास्त्री, आर्य समाज 28-31 फरीदाबाद
मुद्रक: मयंक प्रिन्टर्स, मो. 9810580474

Tittle Front Page के पीछे

यह पुस्तक हमारे पूज्य पिता जी स्वर्गीय श्री पृथ्वी राज जी नागपाल व पूज्य माता जी स्वर्गीय श्रीमती कौशल नागपाल जी की स्मृति में भेंट की जा रही है। अत्यंत ही सरल स्वभाव वालें हमारे माता-पिता ने अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा व प्रचार में समर्पित किया। उन दोनो का सम्पूर्ण जीवन सदा अनेकों धार्मिक एवम् सामाजिक संस्थाओं से जुड़ा हुआ था।

हमारी पूज्य माता जी सन् 1965 से सन् 1996 तक करनाल की अनेक आर्य समाजों से तथा 1996 से अपनी अन्तिम साँस तक फरीदाबाद की अनेक आर्य समाजों में अपना अतुलनीय एवं अविस्मयरणीय योगदान दिया। वह अपनी भक्ति, निष्ठा, समर्पण, 'सूर्याचन्द्रसौ इव' व उज्जवल-घवलकीर्ति से अपने अन्तिम समय तक सम्पूर्ण समाज की सेवा करती रही।

हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है कि प्रभु हमारे माता-पिता को अपने चरणों में स्थान दे, उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो व उनका परिवार सदा उनके दर्शायें हुये मार्ग पर चलता रहें।

नागपाल परिवार, सैक्टर-28, फरीदाबाद

Tittle Back Page के पीछे

प्रार्थना

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर! तुम अनंत काल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्ही प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो कुछ शुभ है तथा हितकर है उसे तुम बिना माँगे ही स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो। तुम्हारे आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। तुम्हारी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थो की प्राप्ति है।

हे जगतपिता परमेश्वर! हम में सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अन्त:करण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो! हम तुम्हे पुकारते हैं और तुम्हारा आँचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो!। हम में सात्विक प्रवृत्तियाँ जागरित हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकारशून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों। हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो, तुम्हारे संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हमारा हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान तथा विशाल हो।

हे प्रभो! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो। दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले तुम्हारे चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो। इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करें।

ओ३म् शान्ति:! शान्ति:! शान्ति:!!!

॥ ओ३म् ॥

वैदिक संध्या एवम् दैनिक अग्निहोत्र

हवन सामग्री

1. हवन कुण्ड 2. देसी घी-250 ग्राम
3. सामग्री-500 ग्राम व शर्करा-50 ग्राम
4. समिधा (सूखी लकड़ी) आम की 2.5 किलो
5. धूप 6.कपूर 7.रूई 8. रोली (केसर)
9. चावल 10. फूल 11.कलावा 12.माचिस
13.कटोरी 4 14. चम्मच 4 15. लोटा 1
16. थाली 1 17. प्लेट 3
18. बड़ी चम्मच 19. घी का बर्तन 1

(यह सामग्री चार व्यक्तियों के लिए है। संख्या अनुसार सामग्री इत्यादि बढ़ा सकते है।)

प्रार्थना

ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राणाधार है।
आम् है कर्त्ता विधाता, ओम् पालनहार है।।
ओम् है दु:ख का विनाशक, ओम् सर्वानन्द है।
ओम् है बल-तेजधारी, ओम् करूणाकन्द है।
ओम् सबका पूज्य है, हम ओम् का सिमरन करें।
ओम् ही के जाप से, हम शुद्ध अपना मन करें।।
ओम् के गुरुमन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी, धर्म में होगी लगन।।
ओम् के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अन्त में यह ओम् हमको मुक्ति तक पहुँचाएगा।।
ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राणाधार है।
ओम् है कर्त्ता विधाता, ओम् पालनहार है।।

गायत्री मन्त्र व अर्थ

ओं भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता है तू।।
तेरा महान् तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान्।।
तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला।।
दाता हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला।।

वैदिक सन्ध्या

ओं भूर्भवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रयोदयात्॥
ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शयोंरभि स्त्रवन्तु नः॥ (तीन बार आचमन करें)

1. ओं वाक् वाक्। इस मन्त्र से मुख का दक्षिण और वाम पार्श्व।
2. ओं प्राणः प्राणः। इससे दक्षिण और वाम नासिका छिद्र।
3. ओं चक्षुः चक्षुः। इससे दक्षिण और वाम नेत्र।
4. ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्। इससे दक्षिण और वाम श्रोत।
5. ओं नाभिः। इससे नाभि।
6. ओं हृदयम्। इससे हृदय।
7. ओं कण्ठः। इससे कंठ।
8. ओं शिरः। इससे मस्तक।
9. ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। इससे दोनों भुजाओं के मूल स्कन्ध।
10. ओं करतलकरपृष्ठे। इससे दोनों हाथों के ऊपर तले स्पर्श करें।

(पात्र में से मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से स्पर्श करके प्रथम दक्षिण और पश्चात् वाम भाग में इन्द्रियस्पर्श करें।)

मार्जन मन्त्र

1. ओं भूः पुनातु शिरसि। इस मन्त्र से सिर पर छींटा देवे।
2. ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः। इस मन्त्र से दोनों नेत्रों पर छींटा देवे।
3. ओं स्वः पुनातु कण्ठे। इस मन्त्र से कण्ठ पर छींटा देवे।
4. ओं महः पुनातु हृदये। इस मन्त्र से हृदय पर छींटा देवे।
5. ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। इस मन्त्र से नाभि पर छींटा देवे।
6. ओं तपः पुनातु पादयोः। इस मन्त्र से दोनों पगों पर छींटा देवे।
7. ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि।
   इस मन्त्र से पुनः मस्तक पर छींटा देवे।
8. ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र। इस मन्त्र से सब अंगों पर छींटा देवे।

प्राणायाम मन्त्र

ओं भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः।
ओं तपः। ओं सत्यम्।

(पुरोवक्त रीति से प्राणायाम की क्रिया करते जावे ओर प्राणायाम मन्त्र का जप भी करते जावे। कम से कम तीन ओर अधिक से अधिक 21)

अघमर्षण मन्त्र

ओम् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात् तपसोध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः॥१॥
ओं समुद्रादणवादधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी॥२॥
ओं सूर्य्याचंद्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥३॥

ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शयों रभि स्त्रवन्तु नः

(इस मन्त्र से तीन आचमन करके निम्नलिखित मन्त्रो से सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति प्रार्थना करे।)

मनसापरिक्रमा-मन्त्र

ओं प्राची दिगग्निधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु
योउस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥1॥
ओं दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु
योउस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥2॥
ओं प्रतीची दिग्वरूणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु
योउस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥3॥
ओं उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरीषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु
योउस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥4॥
ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरूध इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु
योउस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥5॥
ओं ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु
योउस्मान द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥6॥

अथोपस्थान मन्त्राः

ओम् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरूत्तमम्।।
ओम् उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सुर्यम्।।
ओम् चित्रं देवानामुदगादनिकं चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेः।
आ प्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षं सूर्य आत्मा
जगतस्तस्थुषश्च।। स्वाहा
ओम् तच्चक्षुर्देव हितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं
प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः
शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

गायत्री मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

समर्पण

हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कृपयोऽनेन जपोपासनादिकर्मणा
धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।।

नमस्कार मन्त्र

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च।।

।। इति वैदिक संध्या।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

प्रार्थना

हे सर्वरक्षक ओम् तुमको बार-बार प्रणाम है,
प्राण प्रिय भू दु:ख विनाशक ओम् तुम्हारा नाम है।
साच्चिद स्व: आनन्द मंगल मूल तुम शुभ रूप हो,
हम हैं प्रजा सब आपकी, तुम ही हमारे भूप हो।
माता-पिता सविता विधाता देव दिव्य प्रकाश हो,
हम ग्रहण करते है वरेणयम् भक्तजन की आस हो।
शुभ गुण सदन विज्ञान सागर भव्य प्रिय भुवनेश हो,
हम है उपासक आपके तुम ज्ञान गम्य गणेश हो।
मानस भवन में आपका हम ध्यान् नित् धरते रहें,
प्रेरित करो बुद्धि हमारी, दुरित सब हरते रहें।
हो भव्य भावों से भरा भगवान् यह घर आपका,
निश दिन सुमंगल गान हो दर्शन न होवे पाप का।
हे सर्वरक्षक ओम् तुमको बार-बार प्रणाम् है,
प्राण प्रिय भू दुख विनाशक ओम् तुम्हारा नाम है।

आचमनमन्त्रा:

ओम अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।१।। इससे पहला
ओम अमृतापिधानमसि स्वाहा।।२।। इससे दुसरा
ओम सत्यं यश: श्रीर्मयि श्री: श्रयतां स्वाहा।।३।। इससे तीसरा

अडगन्स्पर्शमन्त्रा:

ॐ वाड्म आस्येऽस्तु।। इस मन्त्र से मुख
ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु।। इस मन्त्र से नासिका के दोनों भाग
ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।। इससे दोनों आँखें
ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।। इससे दोनों कान
ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु।। इससे दोनों भुजाऐं
ॐ ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु।। इससे दोनों जंघाएं
ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा में सह सन्तु।।
इससे सारे शरीर पर जल का मार्जन करें।

ईश्वर-स्तुति-प्रार्थनोपासना मन्त्राः

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव:॥१॥

तू सर्वेश सकल सुखदाता शुद्धस्वरूप विधाता है।
उसके कष्ट नष्ट हो जाते शरण तेरी जो आता है।।
सारे दुर्गुण दुर्व्यसनो से हमको नाथ बचा लीजिए।
मंगलमय गुणकर्म पदार्थ प्रेम सिन्धु हमको दीजिए।।

ओ३म् हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः
पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय
हविषा विधेम॥२॥

तू ही स्वयं प्रकाश सुचेतन सुखस्वरूप शुभ त्राता है।
सूर्य चन्द्र लोकादि को तू रचता और टिकाता है।
पहले था अब भी तू ही है घट घट में व्यापक स्वामी।
योग भक्ति तप द्वारा तुझको पावें हम अन्तर्यामी।।

ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते
प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय
हविषा विधेम॥३॥

तू ही आत्म ज्ञान बल दाता सुयश विज्ञ जन गाते है।
तेरी चरण शरण में आकर भव सागर तर जाते है।।
तुझको ही जपना जीवन है मरण तुझे बिसराने में।
मेरी सारी शक्ति लगे प्रभू तुझसे लगन लगाने में।।

ओ३म् यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इन्द्राजा
जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय
हविषा विधेम॥४॥

तुने अपनी अनुपम माया से जग-ज्योति जगायी है।
मनुज और पशुओ को रच कर निज महिमा प्रगटाई है।।
अपने हिय-सिंहासन पर श्रद्धा से तुझे बिठाते है।
भक्ति-भाव से भेंटे लेकर शरण तुम्हारी आते है।।

ओ३म् येन द्यौरूग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः
स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय
हविषा विधेम॥५॥

तारे रवि चन्द्रादि बना कर निज प्रकाश चमकाया है।
धरणी को धारण कर तूने कौशल अलख लखाया है।।
तू ही विश्व विधाता पोषक, तेरा ही हम ध्यान धरे।
शुद्ध भाव से भगवन तेरे भजनाम्रत का पान करे।।

ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि
परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम
पतयो रयीणाम्॥६॥

तुझसे भिन्न न कोई जग में, सबमे तू ही समाया है।
जड़ चेतन सब तेरी रचना, तुझमे आश्रय पाया है।
हे सर्वोपरि विभव विश्व का तूने साज सजाया है।
हेतु रहित अनुराग दीजिए यही भक्त को भाया है।।

ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद
भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतामानशाना स्तृतीये
धामन्नध्यैरयन्त॥७॥

तू गुरु है प्रजेश भी तू है, पाप पुण्य फल दाता है।
तू ही सखा बंधु मम तू ही तुझसे ही सब नाता है।।
भक्तो को इस भव बन्धन से तू ही मुक्त कराता है।
तू है अज अद्वैत महाप्रभु सर्वकाल का ज्ञाता है।।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि
देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम
उक्तिं विधेम॥८॥

तू है स्वयं प्रकाशरूप प्रभु सबका सिर्जन हार तुम ही।
रसना निशि-दिन रटे तुम्ही को मन में बसना सदा तु ही।।
अग अनर्थ से हमें बचाते रहना हर दम दयानिधान।
अपने भक्त जनो को भगवन दीजिए यही विशद वरदान।।

अग्नि प्रदीप्त करने का मन्त्र

ओ३म् भूर्भवः स्वः। (इस मन्त्र से दीपक जलावें)

(इसके पश्चात् निम्न मन्त्र को पढ़कर दीपक से कपूर को प्रज्वलित कर अग्न्याधान करें।)

ओ३म् भूर्भवः स्वद्यौरिव भूम्ना पृथिवी व वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवी देवयजनि पृष्ठे ऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।
ओ३म्। उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते संसृजे थामयं चा।
अस्मिन् सधस्थे ऽध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदता।

(इस मन्त्र से यज्ञकुण्ड में समिधाओं का चयन करके अग्नि को अच्छी तरह प्रदीप्त करें।)

समिदाधान

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया
पशुभिब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे-इदन्न मम॥

(इस मन्त्र से पहली समिधा रखनी है।)

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा। ओ३म् सुसमिद्धाय
शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम॥

(इन दोनों मन्त्रों से दूसरी समिधा रखनी है।)

ओं तं त्वा समिद् भिरंगिरों घृतेन वर्द्धयामसि। वृहच्छोचा
यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽडिगरसे इदन्न मम।

(इन मन्त्र से तीसरी समिधा रखनी है)

पंच घृताहुति

(निम्न मन्त्र को पढ़कर तप्त घी की पाँच आहुति प्रदान करें)

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व
वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया
पशुभिब्र्रह्म वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।
इदमग्नये जातवेद से इदन्न मम।

जल सिंचन मन्त्र

(निम्न मन्त्रों से हाथ में जल लेकर वेदी के चारों ओर जल डालें)

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व॥

(इस मन्त्र से पूर्व दिशा में दक्षिण से उत्तर की ओर)

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व॥

(इस मन्त्र से पश्चिम दिशा में दक्षिण से उत्तर की ओर)

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व॥

(इस मन्त्र से उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर)

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥

(इस मन्त्र से पूर्व से दक्षिण-पश्चिम-उत्तर होते हुए पूर्व दिशा तक चारों ओर जल का सिंचन करें।)

आधार वाज्याहुति मन्त्रः

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये-इदन्न मम॥

(इस मन्त्र से पूर्व उत्तर दिशा में घी की आहुति)

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय-इदन्न मम॥

(इस मन्त्र से दक्षिण दिशा में घी की आहुति)

(निम्न मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य में घी की आहुति दें।)

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये-इदन्न मम॥
ओ३म् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय-इदन्न मम॥

(निम्न मन्त्रों से घी एवं सामग्री से आहुँतियाँ देनी है।)

प्रातः कालीन आहुतियाँ

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिवर्चः स्वाहा।
ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।
(यह आहुति मौन होकर देनी है।)
ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादितेभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादितेभ्यः प्राणापाणव्यानेभ्यः इदन्न मम।
ओं आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा॥
ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते
तया मामद्य मेध्याग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥
ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्नासुव स्वाहा॥
ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा॥

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

(निम्न मन्त्रों से घी एवं सामग्री से आहुँतियाँ देनी है।)

सायंकालीन आहुतियाँ

ओ३म् अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा।
ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।
ओ३म् अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा।
(यह आतुति मौन होकर देनी है)
ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या
जुषाणःऽअग्निवेतु स्वाहा॥
ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्न मम।
ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादितेभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादितेभ्यः प्राणापाणव्यानेभ्यः इदन्न मम।
ओं आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा॥
ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते
तया मामद्य मेध्याग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥
ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्नासुव स्वाहा॥
ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा॥

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

व्याहृत्याहुति मन्त्राः

(केवल घी की आहुति दे)

ओं भूरग्नये स्वाहा।। इदमग्नये इदन्न मम।।
ओं भुवर्वायवे स्वाहा।। इदं वायवे इदन्न मम।।
ओं स्वरादित्याय स्वाहा।। इदमादित्याय इदन्न मम।।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।।
इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्न मम।।

स्विष्टकृताहुतिमन्त्राः

(मिष्ठान आहुति)

ओं यदस्य कर्मणो अत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्।
अग्निष्ट्त्-स्विष्टकृत-विद्यात्-सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे।
अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां
कामानांसमर्धयित्रे सर्वान्नः कामान्तसमर्द्धय स्वाहा।
इदमग्नये स्विष्टकृते इदन्न मम।

गायत्री मन्त्र

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।
ओं त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
ऊर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् स्वाहा।
ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव स्वाहा।
ओ३म् यतो यतः समी हषे, ततो नो ऽ अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्यो अभयं न पशुभ्यः।। स्वाहा।।
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पल्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि
रूपमश्विनौ व्यालम।
इषन्निषाण मुम् इषाणः सर्वलोकमिषाणः।।स्वाहा।।

पूर्ण-आहुति मन्त्र

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते स्वाहा।।
ओम् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।
ओम् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।
ओम् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।

भजन

यज्ञ रूप प्रभो! हमारे भाव उज्जवल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए।
वेद की बोलें ऋचाएँ सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक-सागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचाएँ यज्ञ पर उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।।
भावना मिट जाए मन से पाप-अत्याचार की।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की।।
लाभकारी हों हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये।।
स्वार्थ-भाव मिटे हमारा प्रेमपथ विस्तार हो।
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकाय मस्तक वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करूणारूप करूणा आपकी सबपर रहे।।
परम पूज्य प्रभो! हमारे भाव उज्जवल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए।

प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभार्ग भवेत्।
सबका भला करो भगवान्, सब पर दया करो दयावान।
सब पर कृपा करो भगवान्, सब का सबविधि हो कल्याण।।
सबको दो भक्ति का दान।
सबको दो शक्ति का दान।
सबको दो वेदों का ज्ञान
सबके कष्ट हरो भगवान।
सबके पूर्ण कर दो काम।।
हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी,
सब हों नीरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों,
दुखिया न कोई होवें, सृष्टि में प्राणधारी।।
हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी,
सब हों नीरोग भगवन्, धन-धान्य के भण्डारी।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव।
त्वमेव सर्वम् मम देव देव।।

प्रार्थना

हे शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव, सत्य स्वरूप परमात्मन हम सभी आपके वरण करने योग्य तेज को धारण करते हैं। जो धारण किया हुआ तेज हमारी बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्गों में प्रेरित करे जिससे हम सभी दुःखों, दुर्गुणों, दुर्व्यसनो से पृथक हो, सदैव उत्तम गुण-कर्म स्वभाव पदार्थ सुखादि को धारण करने में समर्थ हो। हे प्रभो इस पावमानी पुनीत बेला में यज्ञदेव के समक्ष उपस्थित होकर आपसे विनम्र प्रार्थना और कामना करते हैं सबका जीवन श्रेष्ठ हो, श्रेष्ठ आचरण युक्त हो, आर्य कहलावे। माता-पिता, गुरु-जन, वृद्धजन, विद्वान्, आतिथि आदि की सेवा सुश्रुषा करते हुए आशीर्वाद के पात्र होवें। आपकी असीम अनुकम्पा से सभी स्वस्थ हों, निरोग हो, प्रसन्न हों, दीर्घायु/शतायु को धारण करते हुए पवित्र मन से आपका चिन्तन, मनन, कीर्तन धन्यवाद सदैव करते रहें आप द्वारा प्रदत्त आशीर्वाद से सबकी सब मनोकामनाऐं पूर्ण हों सभी इष्ट कामनाऐं सिद्ध हो तथा सर्वत्र सुख समृद्धि शान्ति एवम् ऐश्वर्य का वास हो। यही प्रार्थना और कामना है कृपा कर स्वीकार करों। स्वीकार करों। स्वीकार करों।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

शान्ति पाठ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः, पृथ्वी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः,
सर्वंऽशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

जो बोले सो अभय... वैदिक धर्म की जय,

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की जय,

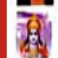
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र की जय,

योगी राज श्री कृष्ण चन्द्र की जय,

भारत माता की जय,

गौ माता का पालन हो,

आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे,

ओम् का झण्डा ऊँचा रहे

वैदिक ध्वनि...... ओ३म्

वैदिक अभिवादन-सभी को सादर नमस्कार

पूर्णमासी की आहुतियाँ (मिष्ठान् से)

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।।१।।
ओ३म् अग्नीषोमाभ्याम् स्वाहा ।।२।।
ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।।३।।

अमावास्या की आहुतियाँ (मिष्ठान् से)

ओ३म् अग्नये स्वाहा ।।१।।
ओ३म् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा ।।२।।
ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।।३।।

आशीर्वाद मन्त्रः

ओम् तच्चक्षुर्देव हितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं
प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं
भूयच्श्र शरदः शतात्।।

ओ३म् सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओ३म् सफलाः सन्तु यजमानस्य कामाः।
ओ३म् पूर्णा सन्तु यजामनस्य कामाः।
ओ३म सौभाग्यमस्तु। ओ३म शुभ भवतुः।
ओ३म स्वस्तिः। ओ३म् स्वस्तिः। ओ३म् स्वस्तिः।

भजन

हम कभी माता पिता का, ऋण चुका सकते नहीं
इनके तो एहसान है इतने, हम गिना सकते नहीं
ये कहाँ पूजा में शक्ति, ये कहाँ फल जाप का
हो तो हो इनकी कृपा से, खात्मा संताप का
इनकी सेवा से मिले, धन, ज्ञान, बल, लम्बी उम्र
स्वर्ग से बढ़कर हैं जग में, आसरा माँ-बाप का
इनकी तुलना में कोई वस्तु, भी ला सकते नहीं
हम कभी माता पिता का, ऋण चुका सकते नहीं

देख ले हम को दुखी तो, भर ले अपने नैन ये
इक हमारे सुख की खातिर, तड़पते दिन रैन ये
भूख लगती प्यास न, और नींद भी आती नहीं
कष्ट हो तन पे हमारे, हो उठे बेचैन ये
इनसे बढ़कर देवता भी, सुख दिला सकते नहीं
हम कभी माता-पिता का, ऋण चुका सकते नहीं
पढ़ लो वेद और शास्त्र का भी, एक यह भी मर्म हैं
योग्यतम संतान का ये, सबसे उतम कर्म हैं
जगत में जब तक जीये, सेवा करें माँ बाप की
इनके चरणों में तन-मन-धन लुटाना धर्म हैं
यह 'पथिक' वह सत्य हैं, जिसको झूठा सकते नहीं
हम कभी माता पिता का ऋण चूका सकते नहीं।

भजन

सारे जहाँ के मालिक तेरा ही आसरा है....

सारे जहाँ के मालिक तेरा ही आसरा है,
राज़ी है हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।

हम क्या बतायें तुझको, सब कुछ तुम्हें खबर है,
हर हाल में हमारी, तेरी तरफ नजर है,
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैसला है,
राज़ी है हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
सारे जहाँ के मालिक तेरा ही...............

हाथों को हम दुआ की, खातिर मिलाये कैसे,
सजदे में तेरे आकर, सिर को झुकायें कैसे,
मजबुरियां हमारी सब तू ही जानता है,
राज़ी है हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
सारे जहाँ के मालिक तेरा ही...............

रो कर कटे या हँस कर, कटती है ज़िन्दगानी,
तू गम दे या खुशी दे, सब तेरी मेहरबानी।
तेरी खुशी समझ कर, सब गम भुला दिया है,
राज़ी है हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
सारे जहाँ के मालिक तेरा ही...............

भजन

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो....

हे नाथ अब तो ऐसी दया हो,
जीवन निरर्थक जाने न पाये।
ये मन न जाने, क्या-क्या कराये,
कुछ बन न पाये, मेरे बनाये।
ऐसा जगा दो, फिर सो न जाऊँ,
अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ।
तुमको ही चाहूँ, तुमको ही पाऊँ,
संसार का भय, कुछ रह न जाये।
ये मन न जाने क्या-क्या कराये।
कुछ बन न पाये मेरे बनाये
हें नाथ अब तो ऐसी दया हो,
जीवन निरर्थक जाने न पाये।
वो योग्यता दो, सत्कर्म कर लू,
हृदय में अपने, सदभाव भर लू।
नर-तन है साधन, भव सिन्धु तर लूँ
ऐसा समय फिर आये न आये
ये मन न जाने क्या-क्या कराये
कुछ बन न पाये मेरे बनाये,
हें नाथ अब तो ऐसी दया है
जीवन निरर्थक जाने न पायें।

भजन

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना....

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना,
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ,
मैं आ तो गया हूँ, मगर जानता हूँ,
तेरे दर पे आने के काबिल नहीं हूँ।
ये माना के दाता हो, तुम कुल जहान के
मगर कैसे झोली फैलाऊ मैं आ के,
जो पहले दिया है, वो कुछ कम नहीं है,
उसी को निभाने के काबिल नहीं हूँ,
तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।
तुम्ही ने अदा की, मुझे जिंदगानी
तेरी महिमा फिर भी, मैंने ना जानी
कर्जदार तेरी दया का हूँ इतना
ये कर्जा चुकाने के काबिल नहीं हूँ
तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।
यहीं मांगता हूँ मैं, सिर को झुका लूँ,
तेरा दीद इस बार जी भर के पा लूँ,
सिवा दिल के टुकड़े के ऐ मेरे दाता,
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ
तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ।

भक्ति गीत

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मनका विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे, हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना

दूर अज्ञान के हो अँधेरे, तू हमें ज्ञान की रौशनी दे
हर बुराई से बचके रहे हम, जीतनी भी दे भली जिन्दगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से, भावना मन में बदले की हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता, मनका विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे, हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना

हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें क्या किया है अर्पण
फूल खुशियों के बांटे सभी को, सबका जीवन ही बन जाए मधुबन
अपनी करूणा का जल तू बहा के, करदे पावन हर एक मन को कोना
इतनी शक्ति हमें देना दाता, मनका विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे, हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना

हम अँधेरे में हैं रौशनी दे, खो ना दे खुद को ही दुश्मनी से
हम सजा पायें अपने किये की, मौत भी हो तो सह ले खुशी से
कल जो गुजरा है फिरसे ना गुजरे, आनेवाला वो कल ऐसा हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता, मनका विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे, हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना

हर तरफ जुल्म है बेबसी है, सहमा-सहमा सा हर आदमी है
पाप का बोझ बढ़ता ही जाए, जाने कैसे ये धरती थमी है
बोझ ममता का तू ये उठा ले, तेरी रचना का ये अंत हो ना
इतनी शक्ति हमें देना दाता, मनका विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे, हमसे भूलकर भी कोई भूल हो ना

भक्ति गीत

ऐ मालिक तेरे बंदे हम, ऐसे हो हमारे करम।
नेकी पर चले और बदी से टले, ताकि हँसते हुये निकले दम।
ऐ मालिक तेरे बंदे हम....

ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इंसान घबरा रहा,
हो रहा बेखबर, कुछ ना आता नजर,
सुख का सूरज छुपा जा रहा।।
है तेरी रोशनी में जो दम, तू अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर चले और बदी से टले, ताकि हँसते हुये निकले दम।।
ऐ मालिक तेरे बंदे हम....

जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना,
वो बुराई करे, हम भलाई करे, नहीं बदले की हो कामना।।
बढ़ उठे प्यार का हर कदम, और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चले और बदी से टले, ताकि हँसते हुये निकले दम।
ऐ मालिक तेरे बंदे हम....

बड़ा कमजोर है आदमी, अभी लाखों हैं इसमें कमी,
पर तू जो खड़ा, है दयालु बड़ा, तेरी कृपा से धरती थमी।।
दिया तूने हमें जब जनम, तू ही झेलेगा हम सब के गम,
नेकी पर चले और बदी से टले, ताकि हँसते हुये निकले दम।।
ऐ मालिक तेरे बंदे हम....